ISSN -PRINT-2231-3613ONLINE2455-8729
International Educational Journal
UGC APPROVAL NO. - 42652
CHETANA

Received on 8th April 2018, Revised on 10th April 2018, Accepted on 17th April 2018

शोध पत्र

अध्यापकों की कार्य-शैलियों का पद स्थिति के सन्दर्भ में अध्ययन

* डॉ. मनोज कुमार शर्मा
प्राचार्य, राजस्थान शिक्षक प्रशिक्षण विद्यापीठ, जयपुर (राज.)
Email: dr.manojsharma74@gmail.com, Mob.-9829460748

मुख्य शब्द - पदस्थिति, व्यक्तिगत भिन्नता, कार्यशैली, अध्यापक वरीयता, काई-वर्ग आदि।

सारांश

यह वर्णनात्मक सर्वेक्षण पद स्थिति के सन्दर्भ में राजस्थान के जयपुर जिले में अध्यापकों की कार्य-शैली वरीयताओं को समझने के लिए किया गया। अध्ययन के निष्कर्ष रूप में यह पाया गया कि प्रथम, द्वितीय व तृतीय श्रेणी अध्यापकों की विश्लेषणात्मक बनाम पूर्णात्मक, उत्तरदायित्व पूर्ण बनाम उत्तरदायित्व मुक्त, क्षेत्र स्वतन्त्र बनाम क्षेत्र आधारित, लघु सातत्य प्रधान बनाम दीर्घ सातत्य प्रधान, दृश्य उन्मुख बनाम श्रव्य उन्मुख, वातावरण सापेक्ष बनाम वातावरण निरपेक्ष, वैयक्तिक बनाम गैर वैयक्तिक कार्य-शैलियों के प्रति दी गयी वरीयताएँ सार्थक रूप से भिन्न हैं तथा नमनीय बनाम अनमनीय और अभिप्रेरणा केन्द्रित बनाम अभिप्रेरणा गैर केन्द्रित कार्य-शैली के प्रति वरीयताएँ सार्थक रूप से भिन्न नहीं हैं। इस अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षों को ध्यान में रखते हुए शैक्षिक निहितार्थ और कतिपय विशिष्ट सुझाव प्रस्तुत किये गए।

अध्यापक शैक्षिक प्रणाली में प्रशासक व प्रबन्धक, निर्देशक व परामर्शक, संगठनकर्ता, अनुदेशक, मूल्यांकनकर्ता, ग्रहणकर्ता, पाठ्यक्रम निर्माता, सामाजिक कार्यकर्ता, वृत्तिक, प्रथमोपचारक आदि के रूप में अपनी भूमिकाओं के साथ प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष हितों से जुड़े कार्यों में अपनी सक्रिय उपस्थिति देता है। डन व प्रेशनिग (1993-94) के अनुसार "कार्यशैलियों में व्यक्ति की जैविक-शारीरिक संरचना, मस्तिष्क कार्यात्मकता, संवेदी रूपात्मकता, शारीरिक आवश्यकता, वातावरणीय वरीयता, सामाजिक पक्ष तथा व्यावसायिक अभिवृत्तियों जैसे शैली अनुबन्धित तत्वों का समावेश होने के कारण सटीक सूचनाऐं प्राप्त हो सकती हैं।" प्रेशनिग (2004) के अनुसार "डन एवं डन के सीखने की शैली प्रतिमान पर आधारित अध्ययनों में मस्तिष्क कार्यात्मकता के आधार पर व्यक्ति की वरीयतायें निर्धारित होती हैं।" इससे यह संभव है कि इनका प्रभाव एक व्यक्ति के रूप में अध्यापक की मस्तिष्क कार्यात्मकता और फिर उसके कार्य पर भी हो।

कार्य-शैली के सम्प्रत्यय को समझने के लिए डन व प्रेशनिग (1993-94) ने तथा अध्यापकों की कार्यशैलियों की व्याख्या करने के लिए मिश्रा (2003) ने अध्ययन किया और निष्कर्ष रूप में व्यक्त किया कि "कुछ विशिष्ट स्थितियों को छोड़कर अध्यापकों की कार्यशैलियाँ उनके शैक्षिक अभ्यासों को प्रभावित करती हैं। अपनी कार्य-शैली के बारे में जानकारी होने से अध्यापक समस्या समाधान एवं सृजन क्षमता में सुधार कर सकता है; समय का प्रबन्ध कर सकता है; दबाव में तनाव कम कर सकता है; कार्यक्षेत्र को अपने और दूसरे लोगों के लिए सहयोगी बना सकता है। वांछित कौशलों के विकास के लिए सफल प्रशिक्षण प्राप्त कर सकता है।"

कार्य-शैली से सम्बन्धित साहित्य एवं इस क्षेत्र में हुए सम्प्रत्ययात्मक अध्ययनों से शोधकर्ता को ज्ञात हुआ कि अध्यापकों का कार्यव्यवहार उनकी कार्य-शैली से प्रभावित होता है। ऐसी स्थिति में क्या भिन्न पद स्थिति वाले अध्यापकों की कार्य-शैली वरीयताएँ भी भिन्न-भिन्न होती हैं? इस मूल प्रश्न से प्रेरित होकर शोधकर्ता ने पद स्थिति के सन्दर्भ में अध्यापकों की कार्य-शैली का अध्ययन करने की आवश्यकता महसूस की।

अध्ययन उद्देश्य

सम्प्रत्ययात्मक विश्लेषण तथा सम्बद्ध साहित्य की विवेचना के आधार पर प्रस्तुत अध्ययन के निम्नांकित उद्देश्य निर्धारित किये गए:

1. पद स्थिति के सन्दर्भ में अध्यापकों की विश्लेषणात्मक बनाम पूर्णात्मक कार्य-शैली पर वरीयताओं का अध्ययन करना।
2. पद स्थिति के सन्दर्भ में अध्यापकों की उत्तरदायित्व पूर्ण बनाम उत्तरदायित्व मुक्त कार्य-शैली पर वरीयताओं का अध्ययन करना।
3. पद स्थिति के सन्दर्भ में अध्यापकों की क्षेत्र स्वतन्त्र बनाम क्षेत्र आधारित कार्य-शैली पर वरीयताओं का अध्ययन करना।
4. पद स्थिति के सन्दर्भ में अध्यापकों की लघु सातत्य प्रधान बनाम दीर्घ सातत्य प्रधान कार्य-शैली पर वरीयताओं का अध्ययन करना।
5. पद स्थिति के सन्दर्भ में अध्यापकों की नमनीय बनाम अनमनीय कार्य-शैली पर वरीयताओं का अध्ययन करना।
6. पद स्थिति के सन्दर्भ में अध्यापकों की अभिप्रेरणा केन्द्रित बनाम अभिप्रेरणा गैर केन्द्रित कार्य-शैली पर वरीयताओं का अध्ययन करना।
7. पद स्थिति के सन्दर्भ में अध्यापकों की वातावरण सापेक्ष बनाम वातावरण सापेक्ष बनाम वातावरण निरपेक्ष कार्य-शैली पर वरीयताओं का अध्ययन करना।
8. पद स्थिति के सन्दर्भ में अध्यापकों की वैयक्तिक बनाम गैर वैयक्तिक कार्य-शैली पर वरीयताओं का अध्ययन करना।
9. पद स्थिति के सन्दर्भ में अध्यापकों की दृश्य उन्मुख बनाम श्रव्य उन्मुख कार्य-शैली पर वरीयताओं का अध्ययन करना।

शोध अध्ययन विधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन के उद्देश्यानुसार स्वतन्त्र चर 'अध्यापकों की पदस्थिति' के सन्दर्भ में आश्रित चर 'अध्यापकों की कार्य-शैली' का यथा-स्थिति के आधार पर वर्णन करने के लिए सर्वेक्षण अध्ययन की 'वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि' का प्रयोग किया गया है।

शोध जनसंख्या

राजस्थान राज्य के जयपुर जिले में स्थित प्राथमिक, उच्च प्राथमिक, माध्यमिक तथा उच्च माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत समस्त अध्यापक इस अध्ययन की जनसंख्या हैं।

न्यादर्शन एवं न्यादर्श

प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श का चयन 'स्तरीकृत यादृच्छिक गैर आनुपातिक सोद्देश्य गुच्छ न्यादर्शन विधि' से किया गया है। अध्ययन के अन्तिम न्यादर्श में प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों के 277 अध्यापक, माध्यमिक विद्यालयों के 248 अध्यापक तथा उच्च माध्यमिक स्तर के 260 सहित कुल 785 अध्यापक चयनित हुए।

शोध उपकरण

पदस्थिति से सम्बंधित सूचना का संकलन निर्मित वैयक्तिक सूचना प्रपत्र में किया गया तथा अध्यापकों की कार्य-शैली से सम्बन्धित प्रदत्तों का संकलन शोधकर्ता द्वारा संरचित व मानकीकृत 'अध्यापकों की कार्य-शैली सूची' की सहायता से किया गया।

प्रदत्तों की प्रकृति

इस शोध अध्ययन में पदस्थिति सम्बन्धित प्रदत्त आवृत्तियों में तथा अध्यापकों की कार्य-शैली सूची से प्राप्त प्रदत्त वरीयताओं के रूप में प्राप्त हुए। इस प्रकार संकलित प्रदत्तों की प्रकृति मात्रात्मक रही।

सांख्यिकीय प्रविधियाँ

न्यादर्श को पदस्थिति के सन्दर्भ में तीन वर्गों- प्रथम श्रेणी, द्वितीय श्रेणी व तृतीय श्रेणी में वर्गीकृत करने के पश्चात् पदस्थिति के सन्दर्भ में अध्यापकों की कार्य-शैली का अध्ययन करने के लिए 3×2 तालिकाएँ निर्मित करते हुए प्रत्येक कार्य-शैली के प्रति प्रदर्शित वरीयताओं के काई वर्ग के मानों का परिकलन किया गया। काई वर्ग के परिकलित मानों की सार्थकता का परीक्षण सार्थकता के .05 विश्वास स्तर पर किया गया।

शोध निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन से अग्रांकित निष्कर्ष प्राप्त हुए:

1. अध्यापकों की विश्लेषणात्मक बनाम पूर्णात्मक, उत्तरदायित्व पूर्ण बनाम उत्तरदायित्व मुक्त, क्षेत्र स्वतन्त्र बनाम क्षेत्र आधारित, लघु सातत्य प्रधान बनाम दीर्घ सातत्य प्रधान, दृश्य उन्मुख बनाम श्रव्य उन्मुख, वातावरण सापेक्ष बनाम वातावरण निरपेक्ष, वैयक्तिक बनाम गैर वैयक्तिक कार्य-शैली के प्रति वरीयताएँ उनकी पद स्थिति के सन्दर्भ में सार्थक रूप से भिन्न पायी गयी हैं। अर्थात् प्रथम, द्वितीय व तृतीय श्रेणी अध्यापकों की विश्लेषणात्मक बनाम पूर्णात्मक, उत्तरदायित्व पूर्ण बनाम उत्तरदायित्व मुक्त, क्षेत्र स्वतन्त्र बनाम क्षेत्र आधारित, लघु सातत्य प्रधान बनाम दीर्घ सातत्य प्रधान, दृश्य उन्मुख बनाम श्रव्य उन्मुख, वातावरण सापेक्ष बनाम वातावरण निरपेक्ष, वैयक्तिक बनाम गैर वैयक्तिक कार्य-शैली के प्रति दी गयी वरीयताएँ सार्थक रूप से भिन्न हैं।
2. अध्यापकों की पद स्थिति के सन्दर्भ में उनकी नमनीय बनाम अनमनीय कार्य-शैली तथा अभिप्रेरणा केन्द्रित बनाम अभिप्रेरणा गैर केन्द्रित कार्य-शैली के प्रति प्रदर्शित वरीयताओं में सार्थक भिन्नता नहीं पायी गयी है। अर्थात् प्रथम, द्वितीय और तृतीय श्रेणी के अध्यापकों की नमनीय बनाम अनमनीय कार्य-शैली तथा अभिप्रेरणा केन्द्रित बनाम अभिप्रेरणा गैर केन्द्रित कार्य-शैली के प्रति वरीयताओं में सार्थक भिन्नता नहीं है।

शैक्षिक निहितार्थ

प्रस्तुत अध्ययन में पदस्थिति वाले किस प्रकार कार्य करने को वरीयता देते हैं, यह शैक्षिक नियोजकों, अध्यापक शिक्षकों, संस्था प्रधानों एवं स्वयं शिक्षकों के लिए निहितार्थ रख सकता है।

1. प्रथम, द्वितीय व तृतीय श्रेणी अध्यापकों की विश्लेषणात्मक बनाम पूर्णात्मक, उत्तरदायित्व पूर्ण बनाम उत्तरदायित्व मुक्त, क्षेत्र स्वतन्त्र बनाम क्षेत्र आधारित, लघु सातत्य प्रधान बनाम दीर्घ सातत्य प्रधान, दृश्य उन्मुख बनाम श्रव्य उन्मुख, वातावरण सापेक्ष बनाम वातावरण निरपेक्ष, वैयक्तिक बनाम गैर वैयक्तिक कार्य-शैली के प्रति दी गयी वरीयताएँ सार्थक रूप से भिन्न हैं। अत: शैक्षिक प्रबन्धकों/प्रशासकों तथा स्वयं अध्यापक को नवीन कार्य पद्धतियों, युक्तियों, कार्य प्रविधियों एवं उपागमों को चयन करते समय यह ध्यान में रखना चाहिए कि प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय श्रेणी अध्यापक विश्लेषणात्मक बनाम पूर्णात्मक, उत्तरदायित्व पूर्ण बनाम उत्तरदायित्व मुक्त, क्षेत्र स्वतन्त्र बनाम क्षेत्र आधारित, लघु सातत्य प्रधान बनाम दीर्घ सातत्य प्रधान, दृश्य उन्मुख बनाम श्रव्य उन्मुख, वातावरण सापेक्ष बनाम वातावरण निरपेक्ष, वैयक्तिक बनाम गैर वैयक्तिक कार्यशैलियों के प्रति समान वरीयता नहीं रखते हैं अत: शैक्षिक व्यवस्थापक/प्रबन्धक व कार्यनीति निर्माताओं को इन अध्यापकों की शैलीगत विभिन्नताओं के पक्ष को ध्यान में रखते हुए संस्थागत नियोजन एवं कार्य संरचना करनी चाहिए।
2. अध्यापकों की पद स्थिति के सन्दर्भ में उनकी नमनीय बनाम अनमनीय कार्य-शैली तथा अभिप्रेरणा केन्द्रित बनाम अभिप्रेरणा गैर केन्द्रित कार्य-शैली के प्रति प्रदर्शित वरीयताओं में सार्थक भिन्नता नहीं पायी गयी है। शिक्षा व्यवस्था से जुड़े प्रबन्धक/प्रशासक एवं स्वयं अध्यापक नवीन कार्य पद्धतियों, युक्तियों, कार्य प्रविधियों एवं उपागमों को अपनाते समय समान कार्य नीतियों को चुन सकते हैं। यह शैलीगत वरीयताएँ सहयोगी वातावरण सृजन की आवश्यकताओं को प्रगाढ़ करती हैं।
3. शिक्षाशास्त्र के अध्येता अपेक्षाकृत बड़े न्यादर्श पर अध्ययन करते हुए पद स्थिति के सन्दर्भ में अद्यापकों की कार्य-शैली वरीयताओं का और अधिक स्पष्ट अनुमान प्राप्त कर सकते हैं। तदनुसार शैक्षिक व्यवस्थापक/प्रबन्धक व कार्यनीति निर्माताओं को अध्यापकों की शैलीगत विभिन्नताओं के पक्ष को ध्यान में रखते हुए संस्थागत नियोजन एवं कार्य संरचना प्रस्तुत कर सकते हैं।

सन्दर्भ सूची

कारलिंगर, एफ. एन. (1986). फाऊन्डेशन्स ऑफ विहेवियरल रिसर्च, न्यूयोर्क, हॉल्ट, राइनहार्ट एण्ड विंटसन.

कॉहन, जेकब (1977). स्टेटिस्टिकल पावर अनालिसिस फॉर दा विहेवियरल साइन्सेज, न्यूयोर्क, एकेडमिक प्रेस.

गुप्ता, एस. पी. (2003). सांख्यिकीय विधियाँ, इलाहाबाद, शारदा पुस्तक भवन.

डन, रीटा एण्ड प्रेशनिग, बारबरा (1993-94). वर्किंग स्टाइल्स एनालसिस, कार्पोरेट वर्जन, एट, www. Creativelearningcentre.com

प्रेशनिग, बारबरा (2004). दा पावर ऑफ डाइवर्जिटी, न्यू वेज ऑफ लर्निंग एण्ड टीचिंग, स्टेनफोर्ड, कण्टीनुम इन्टरनेशनल पब्लिशिंग ग्रुप.

मिश्रा, मुरलीधर (2003). अध्यापकों की कार्यशैलियों का अध्ययन, स्वतन्त्र अध्ययन, वनस्थली विद्यापीठ.

शर्मा, मनोज कुमार (2008). विभिन्न वैयक्तिक कारकों के सन्दर्भ में अध्यापकों की कार्य शैली का अध्ययन, अप्रकाशित शोध प्रबन्ध, शिक्षाशास्त्र, जयपुर, राजस्थान विश्वविद्यालय.

**** Corresponding Author:***

डॉ. मनोज कुमार शर्मा

प्राचार्य, राजस्थान शिक्षक प्रशिक्षण विद्यापीठ, जयपुर (राज.)

Email: dr.manojsharma74@gmail.com, Mob.-9829460748